हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 28 December - 03 january 2026

अरावली की ना दें बली

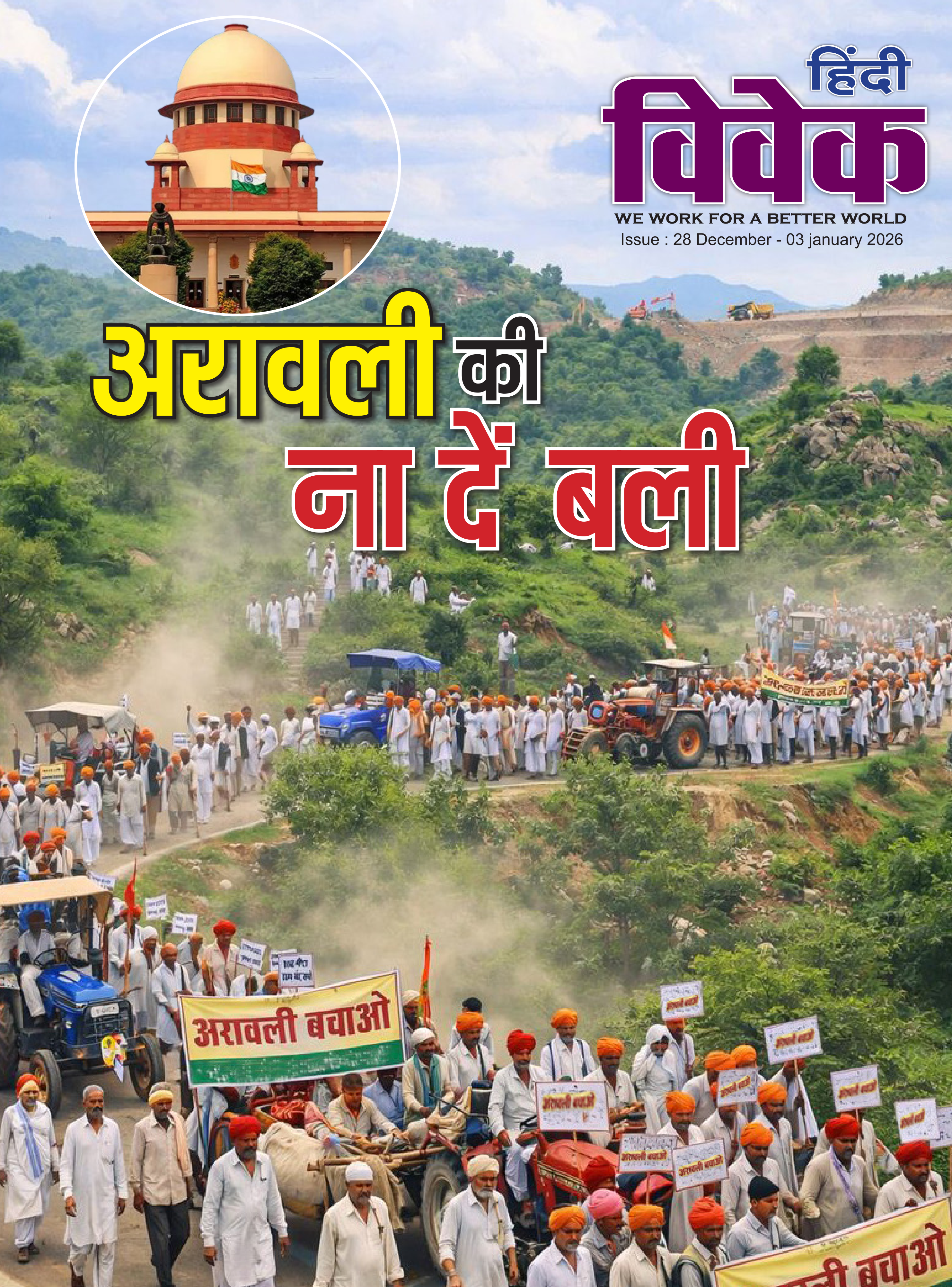

रूपेरी का कमाल, चमक बेमिसाल!
पितांबरी®
रूपेरी®
इन्स्टंट कॉन्टॅक्ट सिल्वर शाईन
Pitambari
Rooperi®
Instant Contact Silver Shine
MAGIC TOUCH
रूपेरी
इन्स्टंट कॉन्टॅक्ट
सिल्वर शाईन
इस्तेमाल का तरीका:
• रुई या कपडे पर रूपेरी की कुछ बूंदे लिजिए
• चांदी को हलके हाथों से साफ किजिए
• साबुन के पानी से धो लिजिए
• चमचमाती स्वच्छता पाइए
पूजा सामग्री
खाने के बर्तन
गहने
५०, १०० मिली. और १ ली. में उपलब्ध।
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 6366932555,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 6703 5564 / 5699, Toll Free: 18001031299.
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

अरावली विवाद पर छिटकती चिंगारी	सुभाष चंद्र	04
अरावली पर द्वंद्व!	प्रो. अलकेश चतुर्वेदी	06
पर्यावरण: विपक्ष की चुप्पी और दोहरी नीति	आशीष कुमार 'अंशु'	09
हिंदुओं को लुभाने का गेम प्लान या सेल्फ गोल	रामेंद्र सिन्हा	11
बांग्लादेश में हिंदुओं के विरुद्ध लक्षित हिंसा	राघव कुमार झा	13
विहिप में संगठनात्मक दायित्व परिवर्तन	दीपक द्विवेदी	16
भू-राजनीति के लिए अहम हैं ये देश	रंजीत कुमार	18
बच्चों पर न डाले परफेक्शन का बोझ	डॉ. मोनिका शर्मा	20
मानवता और सादगी की प्रतिमूर्ति रतन टाटा	विजय कुमार	23
तमिलनाडु की वीरांगना रानी वेलु नचियार	वेदप्रकाश पांडे	24
वर्ष 2025 की कुछ खट्टी-मीठी यादें	संकलन	25
एप से खरीदा जा रहा कचरा	संकलन	26
इसरो ने एक बार फिर रचा इतिहास	संकलन	27
रंगोली: राज्यों के अनुरूप बदलते नाम	संकलन	28
समाचार	-	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

अरावली विवाद पर छिटकती चिंगारी

सुभाष चंद्र

अरावली उत्तर भारत की 'लाइफलाइन' है। इसका संरक्षण केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व का प्रश्न है। अरावली जैसे मुद्दे यह याद दिलाते हैं कि प्रकृति के साथ टकराव नहीं बल्कि सहअस्तित्व ही सतत विकास का रास्ता है।

पर्यावरण केवल एक अलग-थलग मुद्दा नहीं है बल्कि यह अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, आजीविका और भविष्य की पीढ़ियों से सीधे जुड़ा हुआ है। इसके बावजूद संसद में न तो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर विस्तृत चर्चा हुई, न ही वनों के संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण या टिकाऊ विकास जैसे विषयों पर कोई सार्थक विमर्श देखने को मिला। यह स्थिति तब और गम्भीर हो जाती है जब देश के कई हिस्से पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहे हैं।

इस संदर्भ में अरावली पर्वत श्रृंखला से जुड़ा विवाद एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। अरावली न केवल उत्तर भारत के लिए प्राकृतिक ढाल का काम करती है बल्कि जल संरक्षण, जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। इसके बावजूद खनन, निर्माण और अतिक्रमण के कारण यह पर्वत श्रृंखला लगातार कमजोर होती जा रही है। अरावली का क्षरण सीधे तौर पर दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण, मरुस्थलीकरण और जल संकट से जुड़ा हुआ है। यह मुद्दा संसद में व्यापक चर्चा का विषय बन सकता था, लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ।

वास्तव में सर्वोच्च न्यायालय के एक हालिया आदेश के बाद अरावली पहाड़ियों को लेकर पर्यावरणविदों और आम जनता के बीच चर्चा छेड़ दी है। कई संस्थाओं और पर्यावरणविदों ने आशंका जताई कि यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए तो अरावली का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। यह चिंता केवल पहाड़ियों के क्षरण तक सीमित नहीं है बल्कि उससे जुड़े व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र-भूजल, जैव विविधता, जलवायु संतुलन और मानव जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को लेकर है।

इस मुद्दे की गम्भीरता जब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी तक पहुंची तो इसे केवल कानूनी या प्रशासनिक प्रश्न मानकर नहीं छोड़ा गया। उनकी पहल पर केंद्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए अरावली के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए ठोस कदम उठाने की दिशा में पहल की। यह स्पष्ट संकेत है कि पर्यावरण संरक्षण सरकार की प्राथमिकताओं में केवल कागजी नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से शामिल है। आज आवश्यकता है कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों को अवसर के रूप में देखा जाए- एक ऐसे अवसर के रूप में, जहां केंद्र और राज्य सरकारें, वैज्ञानिक संस्थान, स्थानीय समुदाय और पर्यावरणविद एक साझा रणनीति पर काम करें। अरावली को बचाना केवल पर्यावरण की रक्षा नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करना है। यदि अब भी चूक हुई तो इसका परिणाम केवल प्रकृति नहीं, पूरा समाज भुगतेगा।

'सेव अरावली ट्रस्ट' के विशेषज्ञ विजय बेनज्वाल और नीरज श्रीवास्तव ने इस निर्णय पर गम्भीर चिंता जताई है। उनका कहना है कि हरियाणा में केवल दो चोटियां ही 100 मीटर से ऊपर हैं, एक तोसाम (भिवानी जिला) और दूसरी मधोपुरा (महेंद्रगढ़ जिला), बाकी क्षेत्र अब संरक्षण से बाहर हो सकता है। अरावली पर्वतमाला उत्तर भारत की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है। यह न केवल मरुस्थलीकरण को रोकने में सहायक है, बल्कि भूजल रिचार्ज, जैव विविधता के संरक्षण और तापमान संतुलन में भी इसकी भूमिका निर्णायक रही है। वहीं यमुना नदी दिल्ली को जीवनदायिनी जलधारा प्रदान करती आई है। इन दोनों के संतुलन ने ही दिल्ली को रहने योग्य बनाया।

हालांकि समय के साथ विकास के नाम पर इस संतुलन को गम्भीर चोट पहुंची है। अवैध खनन, अनियंत्रित शहरीकरण और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने अरावली को कमजोर किया है। विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के कुछ निर्णयों में गहन पर्यावरणीय अध्ययन की कमी रही है। उनका कहना है कि न्यायालय को केंद्र सरकार के प्रस्तावों को बिना व्यापक वैज्ञानिक मूल्यांकन के पूरी तरह स्वीकार नहीं करना चाहिए था। न्यायिक संस्थाओं की अपनी सीमाएं होती हैं और ऐसे मामलों में विस्तृत अध्ययन व विशेषज्ञ परामर्श आवश्यक है।

अरावली केवल पहाड़ों की श्रृंखला नहीं है बल्कि यह उत्तर भारत के पर्यावरणीय संतुलन की रीढ़ है। मरुस्थलीकरण को रोकने, भूजल स्तर बनाए रखने, जैव विविधता के संरक्षण और दिल्ली-एनसीआर सहित आसपास के क्षेत्रों को प्रदूषण से बचाने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके बावजूद विगत दशकों में अवैध और अनियंत्रित खनन ने अरावली के बड़े हिस्से को खोखला कर दिया है। इस सम्बंध में राजस्थान के मुख्य मंत्री भजनलाल शर्मा ने पूरी स्पष्टवादिता के साथ कहा है कि अरावली हमारी अमूल्य धरोहर है। इस पर डबल इंजन सरकार का दृष्टिकोण पूरी तरह स्पष्ट है। इसके साथ किसी तरह की कोई छेड़छाड़ नहीं होगी। केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा अरावली पर्वतमाला के संरक्षण के लिए उठाए गए हालिया कदम निस्संदेह स्वागतयोग्य हैं।

दिल्ली से गुजरात तक फैली विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रृंखलाओं में से एक अरावली पर्वतमाला आज अवैध खनन, अतिक्रमण और पर्यावरणीय उपेक्षा के कारण गम्भीर संकट का सामना कर रही है। ऐसे में केंद्र द्वारा पूरे अरावली क्षेत्र में नए खनन पट्टों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्णय पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

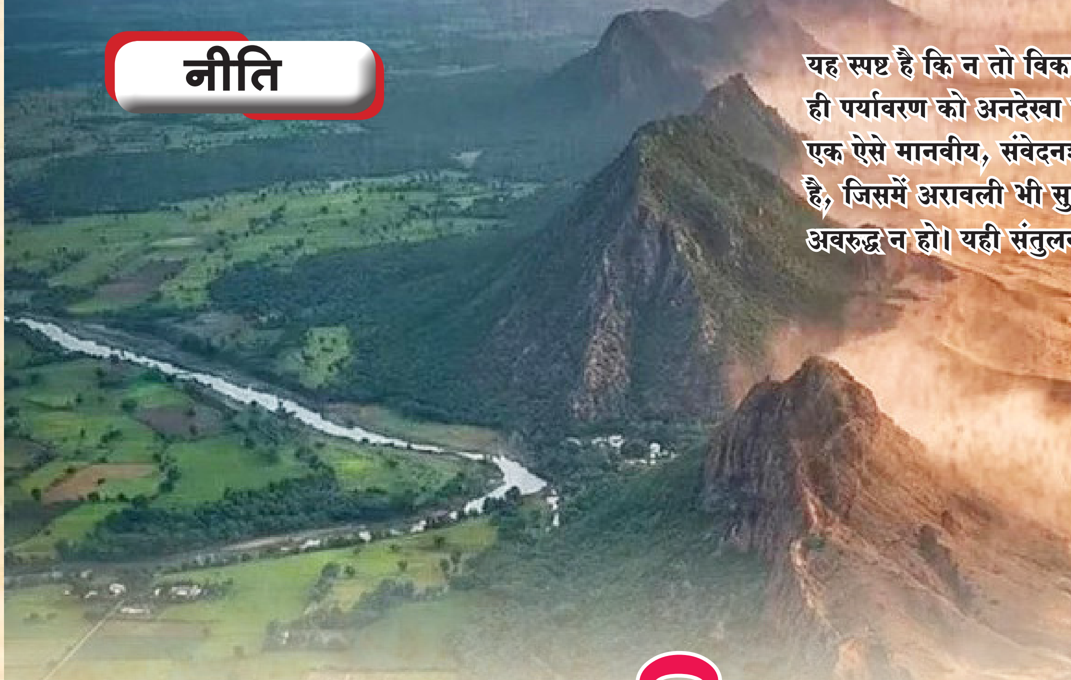

यह स्पष्ट है कि न तो विकास को रोका जा सकता है और न ही पर्यावरण को अनदेखा किया जा सकता है। आवश्यकता एक ऐसे मानवीय, संवेदनशील और व्यावहारिक दृष्टिकोण की है, जिसमें अरावली भी सुरक्षित रहे और भारत का विकास भी अवरुद्ध न हो। यही संतुलन भारत के भविष्य की कुंजी है।

प्रो. अलकेश चतुर्वेदी

अरावली पर द्वंद्व

अरावली पर्वतमाला आज केवल एक भौगोलिक संरचना नहीं रह गई है बल्कि वह भारत के विकास मॉडल, पर्यावरणीय चेतना और नीति-निर्माण की जटिलताओं का प्रतीक बन चुकी है। एक ओर देश को तीव्र गति से आगे बढ़ने के लिए सड़क, रेल, आवास, ऊर्जा, रक्षा और आधुनिक तकनीक हेतु खनिजों और रेयर अर्थ मिनरल्स की आवश्यकता है तो दूसरी ओर अरावली जैसे संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण भी उतना ही अनिवार्य है। यही द्वंद्व आज भारत के समक्ष सबसे बड़ी नीति-सम्बंधी चुनौती के रूप में खड़ा है।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए आधारभूत ढांचे का विस्तार कोई विलासिता नहीं बल्कि आवश्यकता है। सड़कें, एक्सप्रेस-वे, मेट्रो, औद्योगिक कॉरिडोर, स्मार्ट शहर और रक्षा उत्पादन-ये सभी खनिज संसाधनों पर निर्भर हैं। यदि हम इन खनिजों को देश के भीतर वैज्ञानिक तरीके से प्राप्त नहीं करते तो हमें उन्हें विदेशों से आयात करना पड़ता है। इसका सीधा प्रभाव भारत के भुगतान संतुलन पर पड़ता है, विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव बढ़ता है और आर्थिक आत्मनिर्भरता का लक्ष्य कमजोर होता है। आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना केवल नारों से नहीं बल्कि संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग से साकार होती है।

हालांकि इस यथार्थ के समानांतर एक और सच्चाई भी है- पर्यावरण। अरावली पर्वतमाला दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र के लिए एक प्राकृतिक ढाल की तरह कार्य करती है। यह क्षेत्र भूजल पुनर्भरण, वायु शुद्धिकरण और जैव विविधता संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज एनसीआर पहले ही गम्भीर पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है। वायु प्रदूषण, जल संकट, लगातार गिरता भूजल स्तर, वनों की कटाई और बढ़ता शहरी दबाव इस क्षेत्र को अस्थिर बना रहा है। अरावली में अनियंत्रित कटिंग और खनन इन समस्याओं को और गहरा कर सकता है।

अरावली केवल पत्थरों की श्रृंखला नहीं है, यह अनेक दुर्लभ और विलुप्तप्राय जीव-जंतुओं का आवास भी है। नेवला, सियार, तेंदुआ, दुर्लभ पक्षी प्रजातियां और स्थानीय वनस्पतियां- इन सबका अस्तित्व इस पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ा हुआ है। यदि यह संतुलन टूटा तो इसका प्रभाव केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि पूरे उत्तर भारत की पर्यावरणीय स्थिरता पर पड़ेगा। इसलिए अरावली के संरक्षण की मांग केवल भावनात्मक या प्रतीकात्मक नहीं बल्कि वैज्ञानिक और दीर्घकालिक राष्ट्रीय हित से जुड़ी हुई है।

यहीं से विरोधाभास जन्म लेता है। वही समाज जो तेज विकास, बेहतर सड़कें, रोजगार और आधुनिक सुविधाएं चाहता है, वही समाज पर्यावरण संरक्षण और खनन पर पूर्ण रोक की भी मांग करता है। अधिकतर ऐसे मामलों में न्यायपालिका का हस्तक्षेप होता है, केंद्र सरकार की भूमिका निर्णायक बनती है और नीति-निर्माण न्यायालयों की निगरानी में आ जाता है। यह स्थिति अपने आप में दर्शाती है कि हम अब तक कोई सर्वस्वीकार्य संतुलित मार्ग विकसित नहीं कर पाए हैं।

यह प्रश्न भी उतना ही प्रासंगिक है कि क्या केवल अरावली ही पर्यावरण संकट का केंद्र है? भारत के अन्य क्षेत्रों- झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान- में वर्षों से बड़े पैमाने पर खनन हो रहा है। पहाड़ काटे गए हैं, नदियों से रेत निकाली गई है, कोयला और सीमेंट उद्योग फल-फूल रहे हैं। रेत माफिया नदियों को खोखला कर रहे हैं, कई नदियां विलुप्ति की कगार पर हैं। क्या इन क्षेत्रों में पर्यावरण संकट नहीं है? यदि है, तो फिर जागरूकता और विरोध केवल दिल्ली-एनसीआर तक ही क्यों सीमित रहता है?

सच यह है कि जब समस्या सीधे महानगरों और सत्ता-केंद्रों को प्रभावित करती है तब पर्यावरण चिंता का विषय बनता है। यह एक प्रकार का चयनात्मक पर्यावरणवाद है, जिसे विपक्ष अधिकांश राजनीतिक हथियार की तरह प्रयोग करता है। विकास के नाम पर खनन का समर्थन भी वही करते हैं और जब राजनीतिक अवसर दिखता है तो उसी खनन का विरोध भी। यह दोहरा रवैया न तो पर्यावरण के हित में है और न ही राष्ट्र के विकास के। केंद्र सरकार का दृष्टिकोण इस संदर्भ में अपेक्षाकृत अधिक संतुलित दिखाई देता है। सरकार न तो अंधाधुंध खनन के पक्ष में है और न ही पूर्ण प्रतिबंध के। पर्यावरणीय प्रभाव आकलन, वैज्ञानिक खनन, पुनर्वनीकरण, जल संरक्षण और स्थानीय समुदायों की भागीदारी जैसे उपायों के माध्यम से एक मध्य मार्ग खोजने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार यह मानती है कि विकास आवश्यक है, लेकिन वह पर्यावरण की कीमत पर नहीं होना चाहिए। इसी कारण न्यायपालिका के निर्देशों का सम्मान करते हुए भी सरकार दीर्घकालिक समाधान की दिशा में सोच रही है।

भारत को आज जिस चीज की सबसे अधिक आवश्यकता है, वह है सर्वजनिय सहमति। विकास और पर्यावरण को परस्पर विरोधी ध्रुवों की तरह देखने की बजाए उन्हें पूरक मानने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक तकनीक, सख्त निगरानी, स्थानीय पारिस्थितिकी के अनुरूप खनन, वैकल्पिक खनिज स्रोतों की खोज और पुनर्स्थापन योजनाएं- ये सभी मिलकर उस संतुलित मार्ग का निर्माण कर सकते हैं जिसकी आज आवश्यकता है।

अरावली का प्रश्न वास्तव में भारत के विकास मॉडल की परीक्षा है। क्या हम भावनाओं में बहकर निर्णय लेंगे या विवेक, विज्ञान और राष्ट्रीय हित के आधार पर? क्या हम केवल विरोध की राजनीति करेंगे या समाधान की दिशा में आगे बढ़ेंगे? यदि भारत को एक विकसित, आत्मनिर्भर और पर्यावरण- संतुलित राष्ट्र बनना है तो हमें इस द्वंद्व से ऊपर उठकर सोचना होगा। ●●●

Finest Saffron In The World
Benefits Of Saffron
• Boosts Brain Health
• Improves Digestion
• Improves Vision
• Prevents Hair Loss
Haldiram's
Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT
केसर तिलक
★दिव्यता ★समृद्धि ★शुभ भाग्य
★संपत्ति ★कैरियर के अच्छे अवसर
अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।
तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*
ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*
केसर तिलक कैसे तैयार करें
कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।
*Data on file
GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

शीतकालीन सत्र

पर्यावरण

विपक्ष की चुप्पी और दोहरी नीति

आशीष कुमार 'अंशु'

संसद में 19 दिवसीय शीतकालीन सत्र का आयोजन हुआ। इस सत्र के दौरान कई विधेयक पारित हुए, कुछ योजनाओं के कार्यान्वयन को हरी झंडी मिली, लेकिन इस सत्र में पर्यावरण पर चर्चा तक नहीं हुई, जबकि देश में पर्यावरण संकट एक विकराल समस्या के रूप में सामने खड़ा है।

भारतीय संसद का शीतकालीन सत्र 1 दिसम्बर से 19 दिसम्बर 2025 तक चला। इस 19 दिन के सत्र में कई महत्वपूर्ण विधेयक पारित हुए, वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ पर विशेष चर्चा हुई और चुनावी सुधारों पर विचार विमर्श हुआ। लोकसभा की उत्पादकता 111 प्रतिशत और राज्यसभा की 121 प्रतिशत रही, लेकिन एक महत्वपूर्ण मुद्दा जो इस सत्र में पूरी तरह अनुपस्थित रहा, वह है पर्यावरण। विशेष रूप से अरावली पर्वत श्रृंखला का विवाद, जो सर्वोच्च न्यायालय के 20 नवम्बर 2025 के निर्णय के बाद देशभर में सुर्खियां बटोर रहा था। इस सत्र में पर्यावरण पर कोई गहन चर्चा नहीं हुई, जबकि दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण चरम पर था और अरावली संरक्षण का मुद्दा जल रहा था। यह चुप्पी न केवल सरकार की प्राथमिकताओं पर प्रश्न उठाती है बल्कि विपक्ष की लापरवाही को भी उजागर करती है, जो सरकार का विरोध करने हेतु सदन में उपस्थित रहता है, लेकिन पर्यावरण जैसे जीवन-मरण के प्रश्न पर सदन से भाग खड़ा होता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने नवम्बर 2025 में अरावली पहाड़ियों की एकसमान परिभाषा स्वीकार की। न्यायालय ने केंद्र की समिति की सिफारिशों को मंजूरी दी, जिसमें कहा गया कि स्थानीय भू-आकृति से 100 मीटर या उससे अधिक ऊंची पहाड़ियां ही 'अरावली हिल्स' मानी जाएंगी। यदि दो ऐसी पहाड़ियां 500 मीटर के दायरे में हैं, तो बीच का क्षेत्र भी संरक्षित होगा। न्यायालय ने नई खनन लीज पर रोक लगा दी और सस्टेनेबल माइनिंग प्लान बनाने का आदेश दिया।

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने स्पष्ट किया कि यह निर्णय अरावली के 90 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र को संरक्षित करता है, केवल 0.19 प्रतिशत में ही खनन की सम्भावना है और अवैध खनन पर सख्ती बढ़ेगी, लेकिन निर्णय के तुरंत बाद अफवाहें फैलीं कि इससे अरावली का बड़ा हिस्सा संरक्षण से बाहर हो जाएगा, जिससे खनन और रियल एस्टेट को बढ़ावा मिलेगा।

इस अफवाह ने देशभर में 'सेव अरावली' अभियान को जन्म दिया। राजस्थान के अलवर, उदयपुर, जयपुर में प्रदर्शन हुए। पर्यावरण कार्यकर्ता सड़कों पर उतरे, सोशल मीडिया पर SaveAravalli ट्रेंड किया। विपक्षी दल विशेषकर कांग्रेस ने इसे 'अरावली का मौत का वारंट' करार दिया।

कांग्रेस सांसद अजय माकन ने राज्यसभा में जीरो आवर में इस मुद्दे को उठाया और चेतावनी दी कि कम ऊंचाई वाली पहाड़ियां

संरक्षण से बाहर हो जाएंगी, जिससे दिल्ली का प्रदूषण बढ़ेगा और थार मरुस्थल आगे बढ़ेगा। अन्य विपक्षी सांसदों ने भी प्रदूषण और चार धाम रोड जैसे मुद्दों पर आवाज उठाई, लेकिन यहीं विपक्ष की दोहरी नीति सामने आई। जब सदन में वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ पर विशेष चर्चा हुई। लोकसभा में 8 दिसम्बर को और राज्यसभा में 9-11 दिसम्बर को विपक्षी सांसद पूरे जोश से उपस्थित रहे। प्रधान मंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के वक्तव्यों के दौरान कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे, प्रियंका गांधी वाड्रा सहित कई विपक्षी सदस्य सदन में उपस्थित थे, चर्चा में हिस्सा लिया और उत्तर दिया, लेकिन पर्यावरण या अरावली पर गहन चर्चा की मांग करते समय सदन में हंगामा कर स्थगन करवा दिया और वॉकआउट कर गए।

सत्र के दौरान दिल्ली का AQI लगातार खतरनाक स्तर पर रहा। 2025 में दिल्ली में एक भी दिन सुरक्षित हवा नहीं रही। फिर भी प्रदूषण पर लोकसभा में एक छोटी चर्चा ही हुई, जिसमें पर्यावरण मंत्री यादव ने उत्तर दिया, लेकिन वह भी विपक्ष के हंगामे के बीच सीमित रही। अरावली पर तो कोई नियमित चर्चा ही नहीं हुई। विपक्ष ने SIR (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) और चुनावी मुद्दों पर सदन को बार-बार बाधित किया, जिससे कई दिन कार्यवाही स्थगित रही। यह दोहरा मापदंड क्या दर्शाता है? विपक्ष पर्यावरण को केवल राजनीतिक हथियार बनाता है, जब बाहर प्रदर्शन करने हों या अफवाहें फैलानी हों, लेकिन सदन में जिम्मेदारी से चर्चा करने से भागता है।

अरावली केवल पहाड़ियां नहीं, उत्तर भारत की पारिस्थितिकी की रीढ़ है। यह थार को रोकती है, ग्राउंड वॉटर रिचार्ज करती है, प्रदूषण को नियंत्रित करती है और लाखों प्रजातियों का घर है। पहले अवैध खनन से 31 पहाड़ियां गायब हो चुकी हैं।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय वास्तव में संरक्षण को मजबूत करता है - एकसमान नियम लागू करता है, नई लीज रोकता है और अवैध खनन पर निगरानी बढ़ाता है, लेकिन विपक्ष ने इसे गलत तरीके से प्रस्तुत किया, अफवाहें फैलाईं और बाहर तो अभियान चलाया, लेकिन संसद में चर्चा नहीं होने दी। यदि विपक्ष वास्तव में पर्यावरण प्रेमी है तो सदन में क्यों नहीं रहा? क्यों हंगामा कर कार्यवाही बाधित की? और मां प्रकृति के संरक्षण पर चुप्पी साध ली।

यह लापरवाही निंदनीय है। विपक्ष को समझना चाहिए कि देशभक्ति केवल नारे लगाने या राष्ट्रगान गाने में नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण बचाने में है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

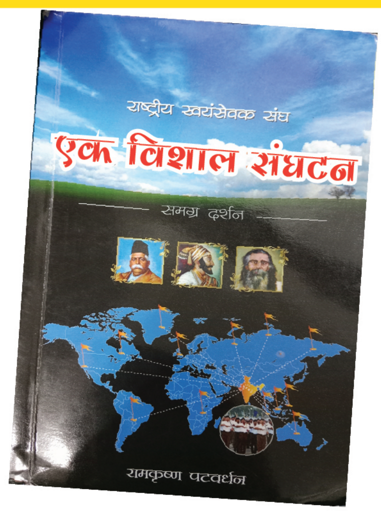

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

पश्चिम बंगाल की मुख्य मंत्री ममता बनर्जी का गेम प्लान क्या है? उन्होंने हिंदुओं के वोट बैंक बटोरने के लिए पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में बाबरी मस्जिद की नींव रखने वाले कबीर को पार्टी से निष्कासित कर दिया और ऐसा माना जाता है कि वो हिंदुओं के मंदिर बनाने के लिए सरकारी धन से करोड़ों रुपए भी दान में दे रही हैं।

हिंदुओं को लुभाने का गेम प्लान या सेल्फ गोल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने बीते दिनों पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में बाबरी मस्जिद के नाम पर मस्जिद बनाने के कदम को राजनीतिक षड्यंत्र बताया, जिसका उद्देश्य चुनावी लाभ के लिए पुराने विवादों को पुनर्जीवित करना है, न कि मुसलमानों के हित में। विपक्ष सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) पर साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण का आरोप लगा रहा है, वहीं राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी अपने विधायक हुमायूं कबीर को निलम्बित करके स्वयं को इस कार्यक्रम से अलग-थलग बता रही है, जबकि कबीर का दावा है कि विधानसभा चुनाव में भाजपा को चुनौती देने के साथ ही उनका उद्देश्य मुख्य मंत्री ममता बनर्जी को सत्ता से हटाना है।

तृणमूल कांग्रेस के निलम्बित विधायक हुमायूं कबीर ने 6 दिसम्बर को बेलडांगा में बाबरी मस्जिद की तर्ज पर बनने वाली मस्जिद की नींव रखी, ठीक उसी दिन जब 1992 में अयोध्या के विवादित ढांचे को ध्वस्त किया गया था। मस्जिद के आधारशिला स्थापना समारोह में हजारों मुस्लिम शामिल हुए। भव्य व्यवस्थाएं की गई थीं, जिनमें लगभग 40 हजार उपस्थित लोगों को शाही बिरयानी का वितरण शामिल था। उस दिन कार्यक्रम स्थल पर स्टेनलेस स्टील के ग्यारह बड़े दान पात्र भी रखे गए थे, जिनमें 50 लाख से अधिक राशि जमा हुई, जबकि क्यूआर कोड भुगतान के माध्यम से लगभग ढाई करोड़ रुपए प्राप्त हुए, ऐसा बताया जाता है। प्रत्येक जुमे पर नमाज पढ़ने के लिए वहां हजारों की भीड़ इकट्ठा हो रही है। लोग अपने सिर पर मस्जिद निर्माण के लिए ईंटें उठाकर निर्माण स्थल पर आ रहे हैं। इसमें केवल बंगाल के मुस्लिम शामिल नहीं हैं अपितु दूसरे राज्यों से भी लोगों की भीड़ आ रही है। भाजपा ने मुख्य मंत्री ममता बनर्जी पर साम्प्रदायिक तुष्टीकरण की अनुमति देने का आरोप लगाया, जबकि टीएमसी ने आरोप लगाया कि यह पूरी घटना भाजपा के समर्थन से अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले क्षेत्र को ध्रुवीकृत करने के लिए रची गई। दूसरी ओर कबीर ने यह दावा किया कि उन्होंने केवल लोगों की मांग पूरी करने के लिए यह पहल की है। इसके पश्चात् कबीर ने 22 दिसम्बर को 'जनता उन्नयन पार्टी' के गठन की घोषणा भी कर दी।

रामेंद्र सिन्हा

कबीर ने एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि उनका उद्देश्य 6 महीने से भी कम समय में होने वाले विधानसभा चुनावों में मुख्य मंत्री ममता बनर्जी को सत्ता से हटाना है।

प्रश्न यह है कि क्या वह बंगाल में मुस्लिम वोटों को विभाजित करने में सफल हो पाएंगे? ऐसे समय में जब ममता बनर्जी विपक्ष के 'मुस्लिम तुष्टीकरण' के आरोपों के बीच हिंदू मतदाताओं

को बनाए रखने का प्रयास कर रही हैं, कबीर मुख्य मंत्री की 'हिंदू समर्थक' नीतियों को उजागर कर रहे हैं, जिसमें मंदिरों की स्थापना और पूजा के लिए उदार अनुदान देना शामिल है। उन्होंने कहा, तृणमूल मुसलमानों को केवल वोट बैंक के रूप में प्रयोग कर रही है। कई मंदिरों के निर्माण में सरकारी धन खर्च किया जा रहा है। न्यू टाउन में उन्होंने एक मंदिर के लिए 1,100 करोड़ रुपए की सम्पत्ति दी है।

पेंच ये है कि कारण क्या है कि मुस्लिम तुष्टीकरण में बढ़-चढ़ कर आगे रहने वाली ममता बनर्जी को उनका ही एक बागी विधायक मुस्लिम विरोधी सिद्ध करने में लगा हुआ है। ममता बनर्जी की डेढ़ दशक की राजनीति को जानने वाले उन्हें हिंदू विरोधी मान सकते हैं, लेकिन मुस्लिम विरोधी नहीं। कबीर उन्हें हिंदुओं का नेता बता रहे हैं। उन्हें बाबरी मस्जिद का विरोधी सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है, परंतु ममता बनर्जी बाबरी मस्जिद के विरोध में होतीं तो क्या कबीर मस्जिद की एक ईंट भी रख सकते थे। कबीर, कहीं दीदी की राजनीति के मोहरे तो नहीं हैं।

प्रश्न यह भी है कि दीदी उन्हें इतना शक्तिशाली क्यों बनने दे रही हैं, जो उनको ही चुनौती देने लगा है। मुसलमानों के व्यापक समर्थन के चलते ही टीएमसी लम्बे समय से पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ है। 2021 के चुनाव में मुस्लिमों के धार्मिक स्थल फुरफुरा शरीफ की पार्टी इंडियन सेक्युलर फ्रंट ममता बनर्जी के विरुद्ध खड़ी थी, परंतु मुस्लिम समाज ने उसका साथ नहीं दिया तो क्या बाबरी मस्जिद जैसे भावनात्मक मुद्दे के सहारे 2026 में ममता बनर्जी जैसी नेता को पटकनी देना सम्भव होगा?

कुछ राजनीतिक पंडित ऐसा मानते हैं कि बाबरी मस्जिद बनाने का ये चक्रव्यूह ममता बनर्जी के संकेत पर रचा गया, हिंदू मतों में विभाजन के लिए, जो टीएमसी से बुरी तरह छिटकता हुआ दिखाई दे रहा था। मतदाता सत्यापन (सर) के कारण ममता बनर्जी को अपना मुस्लिम वोट बैंक घटने का भय तो होगा ही। पश्चिम बंगाल में प्रकाशित की गई ड्रॉफ्ट सूची में से 58,20,899 नाम हटाए गए हैं, लगभग 1.36 करोड़ मतदाताओं को इसलिए भी चिह्नित किया गया है कि उनकी पहचान में विसंगति आई। वहीं लगभग 30 लाख मतदाताओं को 'अनमैप्ड' श्रेणी में डाला गया है, जिन्हें 45 दिनों के भीतर सत्यापन के लिए बुलाया जा सकता है। दीदी मुस्लिम वोट बैंक में कमी को हिंदुओं के वोट से पूरी करना चाहती हैं।

•••

बांग्लादेश में हिंदुओं के विरुद्ध लक्षित हिंसा

हिंदुओं के विरुद्ध हिंसा भड़क रही है। हिंसा की लपटें पूरे बांग्लादेश में उठ रही हैं, लेकिन भारत में अल्पसंख्यकों के नाम पर हो-हल्ला मचाने वाले वामपंथी या इस्लामिक गैंग हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर चुप्पी साधे हुए हैं। यह चुप्पी इस बात का संकेत है कि वामपंथी या इस्लामिक गैंग को केवल भारत में अल्पसंख्यक के नाम पर अपना एजेंडा चलाना है।

राघव कुमार झा

बांग्लादेश में हिंदुओं के विरुद्ध लक्षित हिंसा इस्लामिक जिहादी मानसिकता का परिचायक है और चिंता का विषय है। मुहम्मद युनूस के पास बांग्लादेश को ताजा संकट से निकालने की योग्यता का घोर अभाव है। बांग्लादेश के मैमनसिंह शहर में कथित ईशनिंदा के आरोप में एक 25 वर्ष के हिंदू युवा को पीट-पीटकर मार डाला गया। जुटी भीड़ खुशियां मनाती रही और उसके लटकते हुए शरीर को आग में जलाने के बाद वीडियो बनाती रही।

बांग्लादेश में 2024 में 5 अगस्त को शेख हसीना के पद छोड़ने के बाद हिंदू समुदाय के घरों, दुकानों और मंदिरों पर हमले हुए। हमलों में हिंदु परिवारों के घरों को क्षतिग्रस्त, लूटा, नष्ट या जला दिया गया और उनकी दुकानों को भी हानि पहुंचाई गई। बांग्लादेश की सभी प्रमुख राजनीतिक पार्टियों ने हिंदुओं के विरुद्ध हिंसा की है। 1990 में यह कार्य जातीय पार्टी ने किया, 2001 में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी ने 2013 में जमात-ए-इस्लामी ने और 2014 में बीएनपी और जमात ने मिलकर किया। इस कारण इन पार्टियों को हिंदू समुदाय का समर्थन खोना पड़ा। अवामी लीग को धर्मनिरपेक्षता के लिए अंतिम आशा के रूप में देखा गया और यह आशा की गई कि वह हिंदू अल्पसंख्यकों की रक्षा करेगी, हालांकि सत्ता में रहते हुए इसके शासनकाल में भी कई हमले हुए। 15 अक्टूबर को बांग्लादेश सनातन जागरण मंच, जो हिंदू समुदाय का एक संगठन है, ने चट्टोग्राम शहर के लालदिघी मैदान में 8 सूत्रीय मांगों के साथ एक जनसभा का आयोजन किया। आमार माटी, आमार मां, ए देश छेड़े कोथाओ जाबो ना (मेरा देश, मेरी मां, मैं इस देश को नहीं छोड़ूंगा) जैसे नारों के साथ हिंदू पुरुष और महिलाएं समूहों और जुलूसों में शामिल हुए। मुख्य वक्ता चिन्मय

कृष्ण दास ब्रह्मचारी ने कहा था कि बांग्लादेश में कोई भी लोकतांत्रिक शक्ति साम्प्रदायिक व्यवहार अपनाकर राजनीति नहीं कर सकेगी। बांग्लादेश में बार-बार सत्ता बदल रही है, लेकिन इस देश में स्थिरता नहीं आ रही है। इसका कारण सहिष्णुता का समाप्त होना है। सम्मान खो रहा है, शिक्षकों को त्यागपत्र देने के लिए मजबूर किया जा रहा है। केवल अल्पसंख्यक होने के कारण लोगों को पुलिस की नौकरियों से बर्खास्त कर दिया गया। विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में हिंदुओं की पहचान की जा रही है। कुछ समय के लिए ऐसे गलत कार्य रुक गए थे, लेकिन अब वे फिर से सामने आ रहे हैं। हम अब और चुप नहीं रहेंगे। पुलिस का हस्तक्षेप लगभग नगण्य है। इन अपराधों की सार्वजनिक रूप से निंदा की जानी चाहिए।

भारत में अल्पसंख्यकों के नाम पर हाय-तौबा मचाने वाले वामपंथी या इस्लामिक गैंग बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर चुप्पी साधे हुए हैं। यह चुप्पी इस बात का संकेत है कि वामपंथी या इस्लामिक गैंग को भारत में केवल अल्पसंख्यक के नाम पर राजनीति करना है। इन गैंगों को लोगों की रक्षा और अधिकारों से कोई सरोकार नहीं है। भारत में अल्पसंख्यक के नाम पर केवल अपनी राजनीति को चमकाकर विधानसभा और लोकसभा में कुछ सीट प्राप्त करने की मंशा छुपी हुई रहती है। साथ ही देश में भाजपा सरकार के विरुद्ध एक जन आक्रोश खड़ा कर दुनिया में भाजपा सरकार को बदनाम करने का अभियान चलाया जाता है।

यूनुस जहां काले अतीत वाले इस्लामी ताकतों को काबू में रखने में नाकाम रहे, वहीं प्रतिक्रियावादी समूह बीते समय से पूरी तरह से रिश्ता तोड़ने का दबाव डालते रहे। इसका परिणाम लगभग अराजकता का वातावरण है। इस्लामी ताकतों द्वारा भड़काई गई बांग्लादेशी हिंदुओं और भारत विरोधी भावनाओं ने तनाव को और बढ़ा दिया है। बांग्लादेश के शासकों को इन चेतावनी भरे संकेतों पर ध्यान देना चाहिए। ध्यान बदले की राजनीति से हटकर राज्य की क्षमता को फिर से बनाने और कानून-व्यवस्था बहाल करने पर होना चाहिए। ऐसा लगता है कि यूनुस के पास इस संकट से देश को निकालने के लिए न तो वैधता है और न ही दृढ़ संकल्प।

बांग्लादेश के लिए आगे बढ़ने का एकमात्र सही रास्ता सभी प्रमुख राजनीतिक पार्टियों की भागीदारी के साथ समावेशी चुनाव है। केवल एक वैध और प्रतिनिधि सरकार ही राजनीतिक स्थिरता फिर से बहाल कर सकती है, संस्थाओं को मजबूत कर सकती है और देश के सामाजिक घावों को भरने की प्रक्रिया शुरू कर सकती है।

18 दिसम्बर की रात को बांग्लादेश में उपजी हिंसक अशांति यह दर्शाती है कि देश आज किस मोड़ पर खड़ा है और आगे क्या होने वाला है। यह अशांति प्रधान मंत्री शेख हसीना की सरकार के विरुद्ध जुलाई 2024 के विद्रोह के एक प्रमुख युवा नेता शरीफ उस्मान हादी की मौत के बाद फैली। इस्लामी और भारत के कट्टर आलोचक रहे हादी ने जुलाई के विद्रोह को देश को बदलने के एक बड़े उद्देश्य वाले आंदोलन में बदल करने में मुख्य भूमिका निभाई थी। वह बांग्लादेश की स्वतंत्रता के समय के मूल्यों से पूरी तरह अलग होना चाहता था और राजनीति में जमात-ए-इस्लामी जैसी पार्टियों के साथ-साथ इस्लामी छात्र समूहों के लिए ज्यादा जगह की वकालत करता था। हादी को 12 दिसम्बर को नकाबपोश बंदूकधारियों ने गोली मार दी थी और 18 दिसम्बर को सिंगापुर के एक अस्पताल में चोटों के कारण उसकी मौत हो गई, जिससे पूरे बांग्लादेश में तुरंत और बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। भले ही पुलिस ने इस हमले के सिलसिले में कम से कम आधा दर्जन संदिग्धों को गिरफ्तार किया है, लेकिन यह अभी भी साफ नहीं है कि हत्या किसने करवाई थी। हादी के कुछ समर्थकों ने अवामी लीग पर आरोप लगाया। बीते 18 दिसम्बर को भीड़ ने देश के दो सबसे बड़े अखबारों, 'प्रोथोम आलो' और 'द डेली स्टार' के कार्यालयों पर हमला बोल दिया और आग लगा दी, जिससे वहां काम करने वाले कर्मचारी अंदर फंस गए।

सांस्कृतिक केंद्रों, अवामी लीग के कार्यालयों, पूर्व मंत्रियों के घरों और यहां तक कि बांग्लादेश के मुक्ति नायक मुजीबुर रहमान के घर पर भी हमला किया गया। हसीना को सत्ता से हटाए जाने के 15 महीने बाद भी बांग्लादेश भीड़तंत्र के राज में जूझ रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि हसीना के तानाशाही रवैये ने जुलाई 2024 में लोगों के गुस्से को भड़काने में योगदान दिया था। उनके सत्ता से हटने से बांग्लादेश को सुलह, बहुलवाद और लोकतंत्र की बुनियाद पर नए सिरे से शुरुआत करने का अवसर मिला था, लेकिन वह अवसर गंवा दिया गया। विद्रोह के बाद के समय में अल्पसंख्यकों और अवामी लीग के कार्यकर्ताओं के खिलाफ बड़े पैमाने पर हिंसा हुई। अवामी लीग और उसके छात्र संगठन, छात्र लीग पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जबकि जमात-ए-इस्लामी पर से प्रतिबंध हटा लिया गया।

●●●

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
TAKE YOUR NEXT BIG LEAP WITH THE
TJSB BANK'S ABC LOAN
Funding up to
₹5 Crore
interest rates
@8.50%*
p.a. onwards
Flexible repayment up to
120 months
Available as Term Loan/
Line of Credit
Eligible for Individuals,
Firms, LLPS & Companies
T&C Apply*
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204

दायित्व परिवर्तन, प्रस्तावों में उठाए गए मुद्दे और भावी कार्यक्रम, तीनों मिलकर यह संकेत देते हैं कि आने वाले समय में संगठन की भूमिका केवल प्रतिक्रिया तक सीमित न रहकर संरचनात्मक, सेवा-आधारित और संवाद-केंद्रित होगी।

विहिप में संगठनात्मक दायित्व परिवर्तन

मेरठ प्रांत के ऐतिहासिक हस्तिनापुर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर परिसर, जम्बूद्वीप में विश्व हिंदू परिषद की केंद्रीय प्रन्यासी मंडल की बैठक हाल ही में सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गई। 14 दिसम्बर को हवन-यज्ञ से आरम्भ हुआ। उक्त बैठक 20 दिसम्बर को केंद्रीय टोली की समापन समीक्षा के साथ पूर्ण हुई। इस अवधि में संगठन के वर्तमान कार्यों की व्यापक समीक्षा, संगठनात्मक दायित्वों में परिवर्तन तथा देश-समाज के समक्ष उभरती गम्भीर चुनौतियों पर गहन विचार-विमर्श किया गया। यह बैठक केवल एक नियमित संगठनात्मक आयोजन नहीं रही बल्कि इसे संगठन के लिए दिशा-निर्धारक मंथन के रूप में देखा जा रहा है, जहां वैचारिक स्पष्टता, कार्य-विस्तार और नेतृत्व संरचना- तीनों पर एक साथ निर्णय लिए गए।

दीपक द्विवेदी

सहभागिता और बैठक की संरचना

केंद्रीय प्रन्यासी मंडल की मुख्य बैठक 17, 18 और 19 दिसम्बर को आयोजित हुई, जिसमें भारत के सभी 45 प्रांतों के साथ-साथ लगभग 37 अन्य देशों से विहिप, बजरंग दल, दुर्गा वाहिनी और मातृशक्ति से जुड़े करीब 400 केंद्रीय, प्रांतीय और क्षेत्रीय पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

उद्देश्य और विमर्श का केंद्र

बैठक का मूल उद्देश्य संगठन की भूमिका को वर्तमान सामाजिक-राष्ट्रीय संदर्भ में और अधिक स्पष्ट तथा प्रभावी बनाना रहा। चर्चा के केंद्र में स्वरोजगार व स्वावलम्बन, सामाजिक समरसता, गौरक्षा, धर्मांतरण पर रोक, जनसंख्या असंतुलन, महिला सशक्तिकरण, कुटुम्ब प्रबोधन तथा हिंदू जीवन मूल्यों पर हो रहे आघात जैसे विषय

रहे। इन मुद्दों पर सहमति बनी कि सामाजिक चुनौतियों का समाधान केवल तात्कालिक प्रतिक्रिया से नहीं बल्कि शिक्षा, सेवा, संवाद और सांस्कृतिक चेतना के दीर्घकालिक प्रयासों से सम्भव है।

समकालीन जिहादी चुनौतियां और मानवाधिकार

बैठक में अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों के संदर्भ में यह चिंता स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई कि विश्व के कई क्षेत्रों में उग्र जिहादी हिंसा मानवता, सामाजिक संतुलन और अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए गम्भीर चुनौती बनती जा रही है। विमर्श में यह दृष्टिकोण सामने आया कि हिंसा और आतंक का प्रतिकार केवल सुरक्षा उपायों से नहीं बल्कि वैचारिक स्पष्टता, वैश्विक जागरूकता और मानवाधिकारों के सार्वभौमिक सिद्धांतों के आधार पर होना चाहिए।

नीरज दौनेरिया

किसन प्रजापति

विवेक कुलकर्णी

धार्मिक अल्पसंख्यक की परिभाषा पर विमर्श

बैठक के एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव में धार्मिक अल्पसंख्यक की युक्तिसंगत और तार्किक परिभाषा पर विचार की आवश्यकता जताई गई। प्रस्ताव में यह कहा गया कि भारतीय संविधान का मूल भाव समान नागरिक अधिकार और न्याय है, अतः किसी भी नीति, सुविधा या विमर्श को राष्ट्रीय एकता, सामाजिक संतुलन और संवैधानिक भावना के अनुरूप देखा जाना चाहिए।

केंद्रीय बैठक में घोषित प्रमुख संगठनात्मक दायित्व

अरुण नेटके: मंदिर अर्चक सम्पर्क प्रमुख एवं धर्म यात्रा सह-प्रमुख, यह दायित्व मंदिर-व्यवस्था, अर्चकों के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण तथा धार्मिक यात्राओं के सुव्यवस्थित संचालन की दिशा में संगठन की प्राथमिकता को दर्शाता है।

किसन प्रजापति: राष्ट्रीय संयोजक, बजरंग दल। युवाओं के संगठन, सामाजिक सेवा, राष्ट्रभाव और अनुशासनात्मक प्रशिक्षण को नई गति देने की जिम्मेदारी।

विवेक कुलकर्णी: राष्ट्रीय सहसंयोजक। राष्ट्रीय स्तर पर संगठनात्मक समन्वय एवं नीति क्रियान्वयन में सहयोगी भूमिका।

गोपाल सोनी: क्षेत्र समरसता प्रमुख। सामाजिक समरसता, संवाद और विभिन्न वर्गों के बीच सहयोग बढ़ाने का दायित्व।

विभूतिभूषण पांडे- क्षेत्र सेवा प्रमुख। सेवा कार्यों को संगठित, प्रभावी और क्षेत्र-विशेष की आवश्यकताओं से जोड़ने की जिम्मेदारी।

पूर्णेंद्र सिन्हा: प्रांत मंत्री, छत्तीसगढ़। प्रांत स्तर पर संगठनात्मक विस्तार, समन्वय और कार्यक्रम क्रियान्वयन।

नीरज दोनारिया: क्षेत्र संगठन मंत्री। इंद्रप्रस्थ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में संगठनात्मक संरचना को सुदृढ़ करने की भूमिका।

मुकेश खांडेकर: क्षेत्र संगठन मंत्री। मेरठ पश्चिमी, उत्तर प्रदेश एवं आसपास के क्षेत्रों में संगठनात्मक सक्रियता का दायित्व।

अनिरुद्ध: क्षेत्र संगठन मंत्री। मुंबई महानगरों में सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों के अनुरूप संगठन कार्य को दिशा देना।

दायित्व परिवर्तन का व्यापक संदेश

इन नियुक्तियों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि संगठन युवा नेतृत्व, क्षेत्रीय संतुलन, सेवा, समरसता और संस्कृति को समान महत्व देते हुए आगे बढ़ रहा है। यह बदलाव केवल व्यक्तियों के दायित्व परिवर्तन तक सीमित नहीं है बल्कि यह संगठन की उस रणनीति को दर्शाता है जिसमें नीति-निर्माण, क्रियान्वयन और सामाजिक संवाद तीनों स्तरों पर स्पष्ट जिम्मेदारियां तय की जा रही हैं।

नई रणनीति : प्रतिक्रिया नहीं, संरचनात्मक हस्तक्षेप

हस्तिनापुर बैठक का मूल स्वर यह रहा कि संगठन आने वाले समय में मंदिर, शिक्षा, सेवा और सामाजिक समरसता को संगठित ढांचे में आगे बढ़ाएगा, युवाओं को केवल आंदोलन नहीं बल्कि सकारात्मक सामाजिक भूमिका से जोड़ेगा और वैचारिक चुनौतियों का उत्तर संवाद, तथ्य और संवैधानिक दायरे में देगा। इन दायित्व परिवर्तनों से यह स्पष्ट संदेश गया कि संगठन अनुभव, क्षेत्रीय संतुलन और कार्य-विशेषीकरण के आधार पर नेतृत्व को सुदृढ़ कर रहा है ताकि निर्णय और क्रियान्वयन- दोनों स्तरों पर स्पष्टता बनी रहे। ●●●

भारत अपने अंतरराष्ट्रीय सम्बंध केवल अमेरिका, रूस, यूरोप जैसी बड़ी शक्तियों के साथ ही विकसित नहीं कर रहा बल्कि इथियोपिया, ओमान और जार्डन जैसी क्षेत्रीय शक्तियों के साथ भी कर रहा है, जो भारत की भू-राजनीति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

भू-राजनीति के लिए अहम हैं ये देश

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का 15 से 18 दिसम्बर तक का तीन देशों जॉर्डन, इथियोपिया और ओमान का महत्वपूर्ण दौरा सम्पन्न हुआ है। अपने-अपने क्षेत्रों में इन तीनों देशों की विशेष महत्व तो है ही, साथ ही इन देशों की भारत के साथ राजनीतिक और आर्थिक रिश्तों की भी विशेष भूमिका है, जो क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की राजनयिक प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी इसलिए भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा इन तीन देशों के दौरे पर राजनयिक हलकों में विशेष दृष्टि रखी जा रही थी।

जॉर्डन के किंग अब्दुल्ला के विशेष निमंत्रण पर प्रधान मंत्री मोदी का जॉर्डन जाना इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि किसी भारतीय प्रधान मंत्री का पूर्ण स्तर का जोर्डन दौरा 37 वर्ष बाद हो रहा था। इसी वर्ष दोनों देश अपने रिश्तों की स्थापना की 75वीं वर्षगाठ भी मना रहे हैं।

रंजीत कुमार

2018 में प्रधान मंत्री मोदी जब जोर्डन होते हुए फलस्तीन गए थे तब जार्डन के किंग ने राजनयिक शिष्टाचार के दायरे से बाहर जा कर प्रधान मंत्री मोदी के लिए विशेष व्यवस्था की थी। इसी से उत्साहित हो कर प्रधान मंत्री मोदी ने जार्डन को द्विपक्षीय दौरे में शामिल किया। कृषि विकास हेतु जॉर्डन से आयात की जाने वाली खाद को भारत बहुत महत्व देता है इसलिए प्रधान मंत्री मोदी ने विशेषतौर पर जॉर्डन के किंग से इस बारे में बातचीत की। फास्फेट खाद का जार्डन से होने वाले आयात की बदौलत भारतीय किसान अपनी खेती की पैदावार बढ़ाते हैं।

किंग अब्दुल्ला से आपसी, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय विषयों पर बातचीत के बाद दोनों देशों ने आपसी सहयोग के पांच समझौतों पर हस्ताक्षर किए। जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में तकनीकी सहयोग, जल संसाधन के क्षेत्र में सहयोग, भारत के एलोरा और जार्डन की पेट्रा प्राचीन धरोहरों के बीच टिवनिंग समझौता के अलावा 2025-2029 के बीच सांस्कृतिक सहयोग समझौता और डिजीटल बदलाव के क्षेत्र में सहयोग

समझौते शामिल हैं।

जॉर्डन के साथ रिश्तों को नई गहराई देने के लिए प्रधान मंत्री मोदी ने 8 सूत्री वीजन कागजात प्रस्तुत किया, जिसमें दोनों देशों के बीच परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण दोहन के क्षेत्र में सहयोग का प्रस्ताव भी है। अगले 5 वर्षों में दोनों देशों के बीच वर्तमान व्यापार का स्तर दोगुना कर 5 अरब डालर करने की सम्भावना पर प्रधान मंत्री मोदी ने चर्चा की। जॉर्डन के किंग अब्दुल्ला से बातचीत के बाद दोनों देशों ने एक संयुक्त वक्तव्य भी जारी किया, जिसमें आतंकवाद जैसे चिंताजनक मुद्दों पर जॉर्डन ने भारत को खुला समर्थन दिया।

जॉर्डन के बाद प्रधान मंत्री मोदी अफ्रीकी देश इथियोपिया पहुंचे जहां की राजधानी अदिस अबाबा में उनकी भव्य अगवानी की गई। अफ्रीका में जनतंत्र का पताका फहराने वाले इथियोपिया ने अफ्रीकी एकता को मजबूत किया है और 52 सदस्यीय अफ्रीकी यूनियन का मुख्यालय अदिस अबाबा में स्थापित किया। भारत अफ्रीकी यूनियन के साथ शिखर बैठकें करता है, इस नाते इथियोपिया के साथ रिश्तों को भारत विशेष महत्व देता है। इसी पृष्ठभूमि में भारत ने आपसी आर्थिक व तकनीकी सहयोग को गहरा करने की पेशकश की और इथियोपिया के साथ आपसी रिश्तों का स्तर ऊंचा कर सामरिक साझेदारी का रिश्ता स्थापित करने को मंजूरी दी।

इथियोपिया अफ्रीकी महाद्वीप का सबसे तेजी से विकास करने वाला देश है इसलिए भारत इथियोपिया के साथ आर्थिक आदान-प्रदान को बढ़ाने पर जोर दे रहा है। सामरिक साझेदारी का रिश्ता बनाने के साथ ही दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के 8 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

इथियोपिया के नेता भारत से रिश्तों को कितना महत्व देते हैं यह इसी से पता चलता है कि इथियोपिया के प्रधान मंत्री डॉ. अबी अहमद अली ने प्रोटोकाल तोड़कर खुद प्रधान मंत्री मोदी की अगवानी करने हवाई अड्डे पहुंचे थे। इथियोपिया हिंद महासागर के करीब बीच में स्थित अफ्रीकी देश है, जिसकी सामरिक स्थिति भारत के लिए विशेष अर्थ रखती है क्योंकि भारत खुद हिंद महासागर की सबसे बड़ी सैनिक और आर्थिक ताकत है जो इथियोपिया जैसे तेजी से विकास कर रहे देश को अपने सामरिक साझेदार का दर्जा देता है। इथियोपिया भी भारत को एक उभरती हुई विश्व शक्ति के रूप में मान्यता देता है। यही कारण है कि इथियोपिया के सर्वोच्च सम्मान से न केवल प्रधान मंत्री मोदी को सम्मानित किया गया बल्कि उन्हें इथियोपिया की संसद के संयुक्त सत्र को सम्बोधित करने का सम्मान भी दिया गया।

इस दौरान इथियोपियाई सांसदों की तालियों की थपथपाहट से संसद जिस तरह गूंज रही थी वह अद्भुत वातावरण को दर्शा रहा था, यह पूरे अफ्रीका महाद्वीप के लिए भी एक संदेश था कि 2023 में नई दिल्ली में जी-20 की शिखर बैठक में जिस तरह अफ्रीकी यूनियन को एक सदस्य के तौर पर मान्यता देते हुए जी-20 में शामिल करने में प्रधान मंत्री मोदी ने भूमिका निभाई, सम्पूर्ण अफ्रीकी समुदाय उसके लिए आभारी है। इसके अलावा इथियोपिया 5 देशों वाले ब्रिक्स का विस्तार करने के बाद ब्रिक्स का भी सदस्य बनने से भारत-इथियोपिया सम्बंधों की महत्व और भी बढ़ जाता है। इथियोपिया के बाद प्रधान मंत्री मोदी 17 दिसम्बर को ओमान पहुंचे। जहां ओमान के सुलतान हाएथम बिन तारिक के साथ उनकी आपसी, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय विषयों पर गहन बातचीत के बाद कहा गया है कि भारत और ओमान के बीच आपसी सम्बंध श्रेष्ठ स्तर के बने हुए हैं। प्रधान मंत्री मोदी के ओमान दौरे की बड़ी उपलब्धि दोनों देशों के बीच समग्र आर्थिक साझेदारी की संधि पर हस्ताक्षर थी। इसके अलावा दोनों देशों ने सहयोग के 6 और समझौतों पर सहमति भी की जिसमें सागरीय, उच्च शिक्षा और कृषि क्षेत्र में सहयोग शामिल है।

●●●

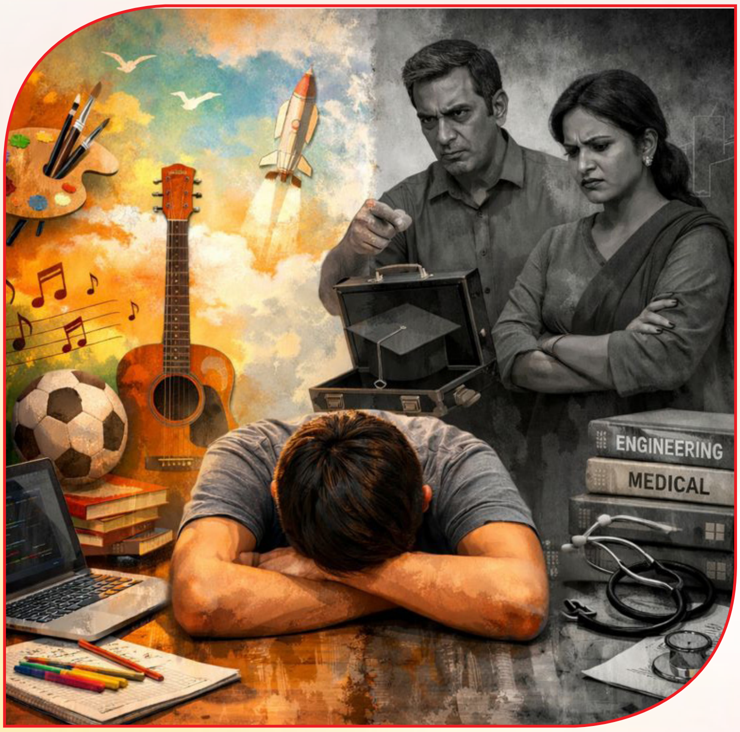

बच्चे अपनी योग्यता, क्षमता व रुचि के अनुसार ही पढ़ना या बनना चाहते हैं। यदि अभिभावकों का दबाव उन पर रहता है कि तुम्हें वही करना है जो हम चाहते हैं तो ऐसे में बच्चे अवसाद के शिकार हो जाते हैं और उन्हें अपनी जिंदगी के रंग भी बेरंग लगने लगते हैं।

डॉ. मोनिका शर्मा

न डालें परफेक्शन का बोझ

प्रत्येक बच्चे का अपना व्यक्तित्व होता है। सीखने, गुनने या कुछ बनने के मोर्चे पर अपना रुचि-रुझान होता है। योग्यता या क्षमता का पैमाना भी अलग-अलग होता है। यहां तक कि सोच-समझ, योग्यता और पसंद अपने माता-पिता जैसी भी नहीं होती। बावजूद इसके बहुत से अभिभावक बच्चों को ना केवल अपनी तरह बनाना चाहते हैं बल्कि उस क्षेत्र में परफेक्शन की भी आशा रखते हैं। अपेक्षाओं का यह बोझ नई पीढ़ी के लिए बोझ बन जाता है। जाने-अनजाने अभिभावक विरासत के रूप में एक अनकहा सा मानसिक और मनोवैज्ञानिक दबाव उनके हिस्से कर देते हैं। चिंतनीय है कि बच्चों पर अपनी मर्जी थोपने और उसी क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के इस दबाव के अनगिनत हानियां हैं।

व्यक्तित्व विकास में बाधा- बच्चों पर अपने जैसा बनने का दबाव डालने पर उनका असली सहज व्यक्तित्व ही खो जाता है। अपनी पसंद से चुने किसी क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले माता या पिता खिलाड़ी, डॉक्टर, इंजीनियर, व्यवसायी या चित्रकार, चाहे जो हों, बच्चों से उसी क्षेत्र में जाने की अपेक्षा एक तरह का अन्याय ही है। इतना ही नहीं अभिभावक जिस क्षेत्र में पारंगत हों उसमें बच्चों पर हर बार, हर हाल में परफेक्ट रहने की आशा भी रहती है। बच्चों पर अभिभावकों की आशाओं का हावी होना उसके वास्तविक व्यक्तित्व को दबा देता है। अपनी सोच कहीं खो सी जाती है। उनकी रुचि को निखरने के अवसर नहीं मिल पाते। यहां तक कि आम जीवन में भी ऐसे बच्चे सहमे से रहने लगते हैं। उनका आत्मविश्वास डगमगा जाता है।

परफेक्शनिज्म एंड गिफ्टेड चिल्ड्रन की लेखिका रोज़मेरी कैलार्ड सज़ुलगिट के अनुसार 'परफेक्शन का यह दबाव रोजमर्रा की जिंदगी में भी बाधा डालता है।' इसीलिए बच्चों की सहज पर्सनैलिटी ना छीनें।

मानसिक और साइकोलॉजिकल समस्याएं- पैरेंटिंग, बच्चों और अभिभावकों के बीच एक प्यारी पार्टनरशिप है। पॉजिटिव जुड़ाव से परे इस यात्रा में बच्चों पर कोई भी दबाव बनाने से बालमन के रंग ही बेरंग हो जाते हैं। अभिभावकों जैसा बनने का दबाव इस साझेदारी का सबसे नकारात्मक पहलू है। अपनी इच्छा के विरुद्ध चुने फील्ड में बच्चे बार-बार असफल भी होते हैं। तब अच्छे प्रदर्शन की आस लगाए बैठे अभिभावकों की आलोचना और उलाहनों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसे में भविष्य बनाने की राह सीखने-समझने की सुखद यात्रा ना होकर हर पल परफेक्शन के प्रति चौकन्ना रहने वाली यात्रा बन जाती है। जिससे बेवजह का भय, डिप्रेशन और अपराधबोध उन्हें घेरे रहता है। अपेक्षाओं के घेरे में बच्चे ना तो मानसिक रूप से सशक्त बनते हैं और न ही भावनात्मक रूप से मजबूत।

चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट और द इमोशनली हेल्दी चाइल्ड पुस्तक

की लेखिका मॉरीन हीले के अनुसार 'यदि कोई अभिभावक बच्चों को गलतियां करने और उनसे सीखने का स्पेस देता है या उनके लिए जिम्मेदारी लेता है तो ऐसे बच्चे ज्यादा आत्मनिर्भर बनते हैं।' कुछ समय पहले कोटा में आत्महत्या करने वाली छात्रा कृति ने अपने सुसाइड नोट में मां के लिए लिखा था 'आपने मेरे बचपन और बच्चा होने का लाभ उठाया और मुझे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर करती रहीं। मैं भी विज्ञान पढ़ती रहीं ताकि आपको खुश रख सकूं।' कृति ने सुसाइड नोट में यह भी लिखा कि 'इस तरह की चालाकी और मजबूर करने वाली हरकत ग्यारहवीं में पढ़ने वाली छोटी बहन से मत करना। वो जो बनना चाहती है, जो पढ़ना चाहती है उसे वो करने देना। वो उस काम में सबसे अच्छा कर सकती है, जिससे वो प्यार करती है।'

कुछ हिस्से नहीं आता- यह गलत नहीं कि अभिभावक अपने बच्चों के लिए कुछ सपने देखें। घर की नई पीढ़ी को सफल देखना चाहें। असल में बच्चों पर अपनी पसंद थोपने का विचार गलत है। घर-परिवार की किसी परम्परा की तरह प्रोफेशन में अपने ही फुटस्टेप्स फॉलो करवाने की जिद गलत है। इतनी गलत कि कई बच्चे जीवन से ही मुंह मोड़ लेते हैं। पीछे केवल प्रश्न रह जाते हैं। मन-मुताबिक बच्चों को दिशा देने वाले माता-पिता के मन में एक मलाल भर रह जाता है। क्षमता और रूचि की परवाह किए मासूमों पर अपनी इच्छाएं लाद देने से ना तो बच्चों के सपने पूरे होते हैं और ना ही अभिभावकों के। यह केवल एक परिवार की नहीं बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की हानि है।

ध्यान रहे कि देश को हर क्षेत्र से जुड़ी वर्कफोर्स की आवश्यकता होती है। यूनाइटेड फोरम द्वारा कुछ स्कूलों में करवाए अध्ययन के अनुसार 8-10 वर्ष तक की आयु के 30 प्रतिशत बच्चे तनाव और अवसाद के शिकार हैं। बच्चों की खुशी पर सफल रहने का दबाव भारी पड़ रहा है। इन्हीं दिनों छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में यूनिवर्सिटी की छात्रा प्रिंसी ने अपने सुसाइड नोट में लिख छोड़ा 'सॉरी मम्मी-पापा। मैं आपकी इच्छा के अनुसार नहीं कर पाई। आपके सेविंग अकाउंट का पैसा खर्च होता जा रहा है। मैं पढ़ाई में अच्छी नहीं हूं और आपके नाम को खराब कर रही हूं।' ऐसे बच्चों के लिए अभिभावकों का सहयोगी रवैया आवश्यक है। यह छात्रा पढ़ाई की बजाए किसी और क्षेत्र में भी कुछ बेहतर कर सकती थी। आए दिन हो रहीं ऐसी घटनाओं को लेकर विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों को लेकर महत्वाकांक्षी होना गलत नहीं है, पर उनकी क्षमता और सोच को समझना भी आवश्यक है।

•••

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

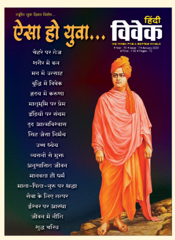

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

जन्मदिवस- 28 दिसम्बर

रतन टाटा एक सफल उद्योगपति ही नहीं बल्कि एक सरल, मानवता व दया से ओत-प्रोत व्यक्ति भी थे। वे एकांतप्रिय तो थे ही, साथ ही साथ वे बनावटी दुनिया से बहुत दूर रहते थे। वे अपना काम स्वयं करना पसंद करते थे और अपने समय का बेहतर सदुपयोग भी करते थे।

मानवता और सादगी की प्रतिमूर्ति

रतन टाटा

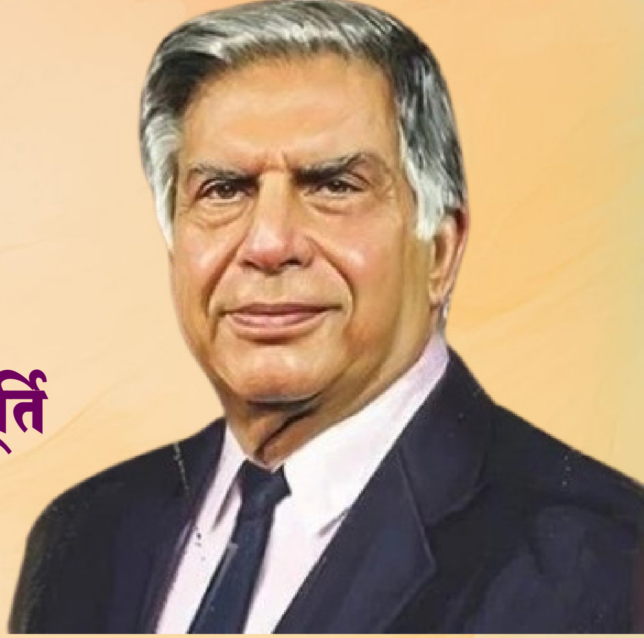

1992 में इंडियन एयरलाइंस ने अपने कर्मचारियों में एक सर्वेक्षण कराया कि दिल्ली से मुम्बई की उड़ान में किस यात्री ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया। सर्वाधिक वोट रतन टाटा को मिले। पता लगा कि बहुत बड़े उद्योगपति होने पर भी वे अपने साथ सचिव नहीं रखते तथा अपना सामान और फाइलें आदि स्वयं लेकर चलते हैं। विमान के उड़ते ही वे कम चीनी वाली एक कप ब्लैक काफी के साथ चुपचाप फाइलें खोलकर काम शुरू कर देते थे।

रतन नवलजी टाटा का जन्म 28 दिसम्बर 1937 को सूरत में एक पारसी परिवार में हुआ था। माता-पिता के बीच सम्बंध खराब होने से उन्हें दादी नवाजबाई ने पाला। उनकी शिक्षा देश में भी हुई और विदेश में भी। विदेश में पढ़ते समय उनके पिता प्रतिमाह एक निश्चित राशि भेजते थे। अतः पैसे समाप्त होने पर स्वाभिमानी रतन टाटा ने कई बार होटल में बर्तन भी धोए।

अमरीका में 7 वर्ष पढ़ने के बाद उन्हें एक अच्छी नौकरी मिली, पर परिवार के आग्रह पर भारत वापस आकर उन्होंने टाटा उद्योग समूह में काम शुरू कर दिया। वे समय के बहुत पाबंद थे। वे स्वयं घर पर कार्यालय का शेष काम करते थे, पर इसके लिए किसी कर्मचारी को नहीं बुलाते थे। अविवाहित होने के कारण वे एकांतप्रिय थे। उन्हें अपने दो कुत्ते (टीटो और टैंगो) बहुत प्रिय थे। 2018 में एक कुत्ते के बीमार होने पर उन्होंने ब्रिटेन का दौरा टाल दिया था, जबकि वहां उन्हें ब्रिटेन के राजकुमार चार्लस एक सम्मान देने वाले थे। टाटा समूह के अध्यक्ष बनने पर उन्होंने पूर्व अध्यक्षों के बड़े कार्यालय की बजाए छोटे कमरे में बैठना पसंद किया। वे कार में प्रायः चालक के साथ आगे ही बैठते थे। उनके पास नौकरों और सचिवों की भीड़ नहीं थी। वे अपना फोन खुद उठाते थे। किसी कर्मचारी से बात करते समय यदि कोई बड़ा अफसर आ जाए तो उसे प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

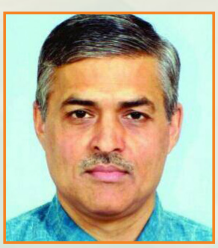

विजय कुमार

कोरोना काल में उन्होंने जोखिम उठाकर काम करने वाले चिकित्साकर्मियों को ताज होटल में ठहराया। इस दौरान वे अपने कई कर्मचारियों से घर और अस्पताल में मिलने गए। 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई के आतंकी हमले का केंद्र टाटा समूह का होटल ताज ही था। इस हमले में मारे गए अधिकांश कर्मचारियों की अंतिम क्रिया में रतन टाटा गए तथा उनके परिवारों को, बच्चों के बड़े और समर्थ होने तक तक पूरा वेतन दिया। टाटा उद्योग समूह में रतन टाटा को जो भी काम मिला, उसे उन्होंने सफल करके दिखाया। इसीलिए 1991 में जेआरडी टाटा ने स्वयं अवकाश लेकर उन्हें समूह का अध्यक्ष बनाया। इस दौरान उन्होंने जो निर्णय लिए, उनकी प्रशंसा भी हुई और आलोचना भी, लेकिन बाद में प्रायः वे सभी सही सिद्ध हुए। टाटा समूह की कार 'इंडिका' कुछ समय तक बहुत घाटे में रही। रतन टाटा उसे बेचने कार उद्योगपति बिल फोर्ड के पास गए पर उसकी अपमानजनक बातों से आहत होकर वे लौट आए। फिर वह समय भी आया जब उन्होंने बिल फोर्ड की ही 'जैगुआर' और 'लैंडरोवर' कार कम्पनी खरीद ली। उन्होंने कई देशी-विदेशी कम्पनियों का अधिग्रहण कर उनका सफल संचालन किया। रतन टाटा को उद्योग और समाजसेवा के लिए देश-विदेश में कई सम्मान प्राप्त हुए। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' और 'पद्मविभूषण' से सम्मानित किया। टाइम पत्रिका ने 2008 में उन्हें विश्व की 100 प्रमुख हस्तियों में शामिल किया। 9 अक्टूबर, 2024 को मुम्बई में भारत के इस अनमोल रत्न का देहांत हुआ।

●●●

जन्मदिन- 3 जनवरी

वीरांगना रानी वेलु नचियार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला नेतृत्व और बहादुरी की प्रतीक होने के साथ ही भारतीय नारी के साहस, शौर्य और सूझबूझ का उत्कृष्ट उदाहरण भी हैं। भारत सरकार द्वारा इनकी स्मृति में वर्ष 2008 में एक डाक टिकट जारी किया गया।

तमिलनाडु की वीरांगना रानी वेलु नचियार

दक्षिण भारत के राज्य तमिलनाडु में आज भी शिवगंगा की वीरांगना रानी वेलु नचियार और उनकी 'उदयाल नारी सेना' की सेनापति कुयिली के संघर्ष तथा आत्म-बलिदान की विजय गाथा अत्यंत लोकप्रिय है। वीरांगना रानी वेलू नचियार का जन्म 3 जनवरी, 1730 को रामनाथपुरम के राज परिवार में हुआ था। उनके पिता राजा चेलामुत्तु विजयारगुंडा सेतुपति तथा मां रानी सक्कांदिमुथल नचियार थीं। वेलु जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा की धनी थीं। इकलौती संतान होने के कारण उनका पालन-पोषण एक राजकुमार की तरह किया गया था। बचपन में ही उन्होंने तलवारबाजी, तीरंदाजी, घुड़सवारी और अन्य युद्ध कलाओं में महारत प्राप्त कर ली थीं। इसके साथ ही उन्हें फ्रेंच, अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू आदि विभिन्न भाषाओं का भी ज्ञान था।

माता-पिता ने उनका विवाह 16 वर्ष की आयु में शिवगंगा के राजा शशि वर्मा के बेटे मुत्तु वेदुंगानाथ थेवर के साथ कर दिया था। पिता की मृत्यु के पश्चात मुत्तू वेदुंगानाथ थेवर शिवगंगा के राजा बने। कुछ वर्ष बाद उन्हें पुत्री रत्न के रूप में एक संतान प्राप्त हुई, जिसका नाम वेलाची नचियार रखा गया।

1772 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना और आरकोट के नवाब ने मिलकर उस समय शिवगंगा पर हमला कर दिया था, जब मुत्तु वेदुंगानाथ थेवर अपनी दूसरी पत्नी गोरी नचियार के साथ महाकालेश्वर के दर्शन के लिए गए हुए थे। दोनों सेनाओं के बीच में भीषण युद्ध हुआ, जिसमें रानी के पति और उनकी दूसरी पत्नी दोनों मारे गए। शत्रु के हमले से बचने की कोई सम्भावना न दिखने पर वेलु नचियार ने अपनी बेटी के साथ शिवगंगा दुर्ग छोड़ दिया। दुर्ग पर आरकोट के नवाब ने कब्जा कर लिया और शिवगंगा का नाम बदलकर हुसैन नगर कर दिया, जिसे ब्रिटिश इंडिया कम्पनी की मंजूरी भी मिल गई। उधर ब्रिटिश और नवाब की सेना से बचती-बचाती रानी वेलु बेटी को लेकर डिंडीगुल के निकट विरुपाक्षी पहुंची। वहां का राजा गोपाल नायक्कर उनका हितैषी था। उसने उन्हें संरक्षण दिया। कुछ समय बाद रानी के विश्वसनीय सेनानायक पेरिया मुरुंडू तथा चिन्ना मुरुंडू भी वहां पहुंच गए। कई वर्षों तक संघर्ष का सामना करते हुए उन्होंने अपना राज्य वापस प्राप्त करने की तैयारी की।

वेदप्रकाश पांडे

वहां रह कर सेना का गठन किया। उन दिनों वह शिवगंगा से निकलकर सुरक्षित ठिकाने की खोज में भटक रही थीं। ब्रिटिश सैनिक उनके पीछे लगे थे। उनसे बचते-बचाते वेलु ने अरियाकुरिची कोविल में शरण ली थीं। इस बीच उनका पीछा करते हुए अंग्रेज सैनिक वहां पहुंच गए। उन्होंने उदायल से वेलु नचियार का पता बताने को कहा, लेकिन उदायल ने साफ मना कर दिया और अकेली ही अंग्रेजों पर टूट पड़ी। क्रुद्ध सैनिकों ने उदायल को जान से मार दिया। उसी वीरांगना के नाम पर वेलु नचियार ने अपनी नारी सेना का नाम 'उदायल नारी सेना' रखा था। वेलु नचियार महिला सैनिकों को खुद प्रशिक्षण देती थीं। उन्होंने अपनी सबसे विश्वसनीय, बहादुर तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाली कुयिली को उदायल नारी सेना का सेनापति बनाया। कुयिली ने अपनी रानी के संघर्ष का अंत करने और उन्हें शिवगंगा का राज्य वापस दिलाने के लिए आत्मघाती हमले की योजना बनाई। दशहरा उत्सव के दौरान शिवगंगा दुर्ग के राजराजेश्वरी मंदिर में होने वाली पूजा के दौरान उदयाल नारी सेना की महिलाओं ने मंदिर में प्रवेश किया। सेनापति कुयिली ने अपने शरीर पर घी लगाकर खुद को आग लगा ली और अंग्रेजों के गोला-बारूद डिपो में कूद कर उसे पूरी तरह से तबाह कर दिया। इस हमले के बाद रानी वेलु नचियार ने अपनी सेना के साथ मिलकर अंग्रेजों को शिवगंगा से खदेड़ दिया और अपना राज्य वापस प्राप्त कर लिया। उन्होंने लगभग 10 वर्षों तक शिवगंगा पर शासन किया और बाद में अपनी बेटी को उत्तराधिकारी बनाया। ●●●

वर्ष 2025 की कुछ खट्टी-मीठी यादें

वर्ष 2025 के जाने का समय हो गया। यह वर्ष अपने साथ कई-कई यादों को समेटे बिदाई लेने की तैयारी में है। यह वर्ष कैसा रहा, धरती के लिए, गगन के उस पार के लिए, आतंकवाद के लिए, बजट के लिए...। इस आलेख में डालते हैं इस पर एक दृष्टि।

वर्ष 2025 में भारत में कई बड़ी राष्ट्रीय घटनाएं हुईं, जिनमें दिल्ली और बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत, पहलगाम आतंकी हमला जिसके उत्तर में 'ऑपरेशन सिंदूर' चला, जिसने पाकिस्तान को चारो खाने चित्त कर दिया और दुनिया भर में पाकिस्तानी आतंकवाद का पर्दाफाश हुआ। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का त्यागपत्र, राम मंदिर की पहली वर्षगांठ और महाकुम्भ का भव्य ऐतिहासिक आयोजन, जिसने देश को गौरवान्वित किया।

भगदड़: बेंगलुरु (RCB जीत के बाद) और अन्य जगहों पर हुई भीषण भगदड़ों ने कई जानें लीं, जिसने नागरिकों की सुरक्षा व्यवस्था और भीड़ मैनेजमेंट पर प्रश्न खड़े किए। वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 यह कानून अप्रैल में देशभर में लागू हुआ।

क्वाड शिखर सम्मेलन: भारत ने क्वाड शिखर सम्मेलन की मेजबानी की, जिसमें डोनाल्ड ट्रम्प भी शामिल हुए।

एयर इंडिया विमान दुर्घटना (अहमदाबाद): एक घातक विमान दुर्घटना हुई, जिसमें कई जानें गईं।

एशिया कप: भारतीय टीम ने पाकिस्तान को हराकर एशिया कप जीता। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने अपना पहला IPL खिताब जीता, जिसके बाद बेंगलुरु में जश्न और फिर भगदड़ मची।

NISAR सैटेलाइट लॉन्च: ISRO और NASA के सहयोग से बनाया गया उपग्रह सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया, जो पृथ्वी के अवलोकन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। भारत के पहले मानव अंतरिक्ष यान कार्यक्रम 'गगनयान' के लिए पहला मानवरहित परीक्षण यान लॉन्च किया गया, जो भविष्य के मानव मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

Axiom-04 मिशन के अंतर्गत एक भारतीय फोल्डेबल स्मार्टफोन नए और पतले फोल्डेबल स्मार्टफोन लॉन्च हुए, जिससे उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार में नवाचार आया।

विश्व बैंक और IMF की रिपोर्टों के अनुसार भारत 2025 में भी दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहा।

महिला श्रम शक्ति में वृद्धि: पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे के आंकड़ों ने महिला श्रम शक्ति भागीदारी (विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में) में वृद्धि दिखाई, जो लैंगिक समानता और आर्थिक विकास के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत और 'सेवा भाव' को बढ़ावा देने के लिए ग्लोबल मैत्री फेस्टिवल जैसे बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

●●●

एप से खरीदा जा रहा कचरा

प्रयोग

आप सामान खरीदने के बाद पैसे देते हैं, लेकिन क्या आप कचरा भी खरीदते हैं और उसके लिए पैसे देते हैं तो चौंक गए न आप! जी हां, ये मजाक नहीं बल्कि सच्चाई है। बिहार में सीवान के नौतन प्रखंड कालखवा ग्राम पंचायत देश का पहला ऐसा गांव बन गया है, जहां घरों से निकलने वाले कचरे की खरीदारी मोबाइल एप के जरिए की जा रही है। वास्तव में ऐसा एक योजना के अंतर्गत किया जा रहा है। लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान (एलएसबीए) में ऐसा हो रहा है। स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाने के लिए यह एक अच्छी योजना बताई जा रही है। जिस एप के माध्यम से कचरा खरीदा जा रहा है उस ऐप का नाम कबाड़ मंडी है। इसमें गांव के लोग अपने घर में निकलने वाले कचरे को ऑनलाइन ऐप पर दर्ज करवाते हैं। इसके बाद कुछ कर्मचारी उनके घर जाते हैं और कचरे का वजन करते हैं। इसके बाद वजन और निर्धारित कीमत के अनुसार उन्हें पैसा मिलता है। कचरे को संग्रह करने से लेकर भुगतान करने तक सब कुछ तय मॉडल के अनुसार होता है।

क्या आपको पता है इस कचरे का क्या होता है?

इस कचरे को जमा करके उनसे आवश्यक और उपयोगी चीजें बनाई जाती हैं। इससे बैग, बोतल बैग, कैरी बैग और डायरी जैसी चीजें भी बनती हैं। लखवा गांव से निकला हुआ कचरा प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट (पीडब्ल्यूएमयू) और वेस्ट प्रोसेसिंग यूनिट (डब्ल्यूपीयू) तक जाता है, इसके बाद आगे की प्रक्रिया शुरू होती है। हालांकि कचरे की वैल्यू ज्यादा नहीं मिलती, लेकिन फिर भी सुरक्षा की दृष्टि से यह अच्छा माना जा रहा है। लोग इसकी सराहना कर रहे हैं और आशा की जा रही हैं कि यदि इसी तरह की स्कीम आएगी तो लोग मूल्यवान कबाड़ यहां-वहां फेंकने से बचेंगे।

•••

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

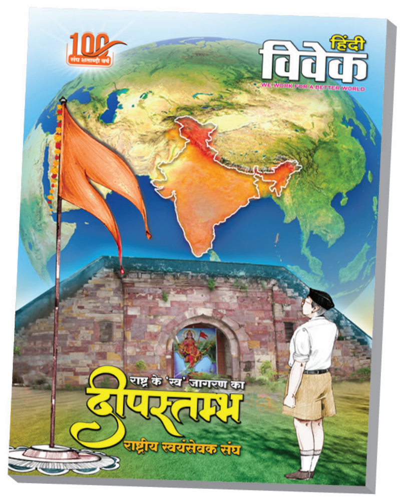

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क
प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

इसरो ने एक बार फिर रचा इतिहास

ब्लू बर्ड ब्लॉक-2 उपग्रह एक अगली पीढ़ी (नेक्स्ट जेन) की प्रणाली का हिस्सा है। इसके जरिए 4जी और 5जी स्मार्टफोन पर सीधे सेल्युलर ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी मिलेगी। उपभोक्ता को किसी अतिरिक्त टॉवर या कस्टमाइज्ड हार्डवेयर की आवश्यकता नहीं होगी।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने इतिहास रच दिया है। इसरो ने इस वर्ष के अपने आखिरी मिशन में सबसे भारी संचार उपग्रह ब्लू बर्ड ब्लॉक-2 को सफलतापूर्वक लॉन्च कर दिया है। यह पूरी तरह से कॉमर्शियल लॉन्चिंग रहा। मिशन के अंतर्गत अमेरिकी कम्पनी एएसटी स्पेसमोबाइल के 6100 किलो वजनी ब्लू बर्ड ब्लॉक-2 संचार उपग्रह को 520 किलोमीटर दूर स्थित पृथ्वी की निचली कक्षा में 16 मिनट में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया। इसरो ने इसकी लॉन्चिंग के लिए अपने एलवीएम3 रॉकेट का प्रयोग किया, जिसे इसकी क्षमताओं के चलते 'बाहुबली' रॉकेट भी कहा जाता है। ये इस लॉन्च व्हीकल की छठवीं उड़ान रही और वाणिज्यिक मिशन के लिए तीसरी।

यह लॉन्चिंग आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से विगत दिवस सुबह 8:55 बजे हुई। इसरो के अनुसार लगभग 16 मिनट की उड़ान के बाद संचार उपग्रह रॉकेट से अलग होकर लगभग 520 किलोमीटर की ऊंचाई पर पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित किया गया। यह मिशन न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) और अमेरिका की AST स्पेसमोबाइल के बीच हुए कॉमर्शियल समझौते का हिस्सा है।

इसरो की सफल लॉन्चिंग पर खुशी जताते हुए प्रधान मंत्री मोदी ने ट्वीट किया। जिसमें प्रधान मंत्री मोदी ने लिखा, भारत के युवाओं की ताकत से हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम ज्यादा आधुनिक और असरदार बन रहा है। LVM3 ने भरोसेमंद हैवी-लिफ्ट प्रदर्शन दिखाया है, जिससे हम गगनयान जैसे भविष्य के मिशन के लिए नींव मजबूत कर रहे हैं, कमर्शियल लॉन्च सेवाओं का विस्तार कर रहे हैं और वैश्विक साझेदारी को मजबूत कर रहे हैं। यह बढ़ी हुई क्षमता और आत्मनिर्भरता को मिला बढ़ावा आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत बढ़िया है।

इस सफल लॉन्चिंग का महत्व है कि इससे कमर्शियल स्पेस सेक्टर में भारत की अंतरिक्ष एजेंसी इसरो की पकड़ काफी मजबूत होगी। ब्लू बर्ड ब्लॉक-2 उपग्रह का वजन लगभग 6,100 किलोग्राम है। यह पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित होने वाला भारत की धरती से लॉन्च होने वाला सबसे बड़ा और सबसे भारी वाणिज्यिक संचार उपग्रह भी है। भारत अपने एलवीएम3 लॉन्च व्हीकल के जरिए चंद्रयान-2, चंद्रयान-3 और वैश्विक स्तर पर सैटेलाइट इंटरनेट उपलब्ध कराने वाली- वन वेब के सैटेलाइट लॉन्चिंग मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम दे चुका है। वन वेब मिशन में इसरो ने एलवीएम से दो बार में कुल 72 सैटेलाइट्स पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित की थीं।

•••

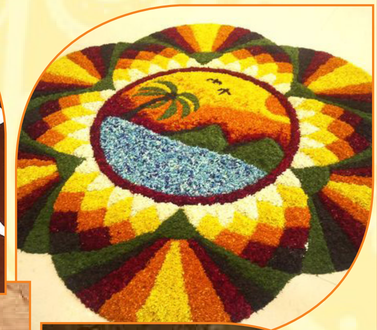

प्राचीन समय से रंगोली भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का एक मूलभूत अंग रहा है। कोई भी शुभ अवसर हो, त्योहार हो, आयोजन हो तो रंगोली बनाने की परम्परा है। यह हाथों की अंगुलियों की कलाकारी होती है जो धरती पर छवियों को उकेरती जाती हैं और मनमोहक रंगों का प्रयोग बेहद सलीके से की जाती है, जो देखने में बहुत ही आकर्षक लगती है।

रंगोली

राज्यों के अनुरूप बदलते नाम

रंगोली बनाने की परम्परा लगभग देश के प्रत्येक राज्यों में हैं। लोग अवसरों के अनुसार रंगोली को उकेरते हैं, जिसमें कलात्मकता और आकर्षण दोनों होता है।

रंगोली बनाने वाला व्यक्ति अपनी कल्पना से विभिन्न तरह की रंगोली बनाता है। कोई रंगों से तो कोई फूलों से और कोई गेहूं या चावल के आटे से रंगोली बनाता है। प्रवेश द्वार पर रंगोली बनाने के प्राथमिक कारणों में से एक यह है कि यह घर में नकारात्मक ऊर्जा के प्रवेश को रोकती है। वहीं दूसरी ओर रंगोली को परिवार में सौभाग्य लाने के लिए अच्छी आत्माओं और देवताओं का आह्वान करने वाले अनुष्ठान से जुड़ी सजावट के रूप में भी माना जाता है, चूंकि यह सौभाग्य लाता है, इसलिए हर भारतीय घर में इसे बहुत महत्व दिया जाता है।

रंगोली का पूरे भारत में भले ही समान महत्व है, पर क्षेत्र के अनुसार इसके नाम बदल जाते हैं। जहां महाराष्ट्र में इसे रंगोली ही कहा जाता है, वहीं तमिलनाडु में यह कोलम कहलाता है। आंध्र प्रदेश में इसे मुग्गू के नाम से जाना जाता है तो बंगाल में अल्पना, वहीं बिहार और मध्य प्रदेश में चौक पूजन, ओड़िशा में ओसा, गुजरात में साथिया, तो राजस्थान में मांडना कहा जाता है।

चौक पूजन भारत में रंगोली के सबसे पुराने रूपों में से एक है। इसे बनाने के लिए गेहूं का आटा, सिंदूर और हल्दी मिलाकर मिश्रण तैयार किया जाता है। इसी मिश्रण से रंगोली का यह रूप तैयार होता है।

अल्पनाः अल्पना एक पारम्परिक बंगाली रंगोली है। यह रंगोली सामान्य तौर पर सफेद होती है। अल्पना बनाने के लिए पीसे हुए चावल को पानी में घोलकर पेस्ट बनाया जाता है। चावल के इसी घोल से घर के मुख्य द्वार पर मनपसंद अल्पना बनाई जाती है।

कोलम : कोलम अपने पारम्परिक संदर्भ में एक दैनिक अनुष्ठान है। इसे बनाने का अर्थ होता है कि घर में सब कुशल-मंगल है। घर में यदि रंगोली नहीं बनी है तो इसका अर्थ यह हुआ कि घर में सब कुछ ठीक-ठाक नहीं है।

पूकलम : केरल में फूलों (पूकल) से रंगोली बनाई जाती है। फूलों से बनी यह रंगोली ही पूकलम कही जाती है। इस राज्य में पूकलम मुख्य रूप से ओणम के समय बनाई जाती है, जो फसलों के पकने का उत्सव होता है। इस पर्व के दौरान पूकलम बनाना शुभ माना जाता है और त्योहार के सभी 10 दिनों में अलग-अलग तरह की पूकलम बनाई जाती है।

पारम्परिक रंगोली : रंगोली का एक अन्य रूप बिंदुयुक्त रंगोली भी है। इस तरह की रंगोली मुख्य रूप से दक्षिण भारत में देखी जाती है। डॉट के माध्यम से यहां अलग-अलग तरह के डिजाइन बनाए जाते हैं और फिर उनमें रंग भरा जाता है। ●●●

सदैव अटल समाधि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम सम्पन्न

पं. अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर सदैव अटल समाधि स्थल (नई दिल्ली) में केंद्रीय मंत्रियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस आयोजन में देश की राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू, उप राष्ट्रपति सीपी राधा राधाकृष्णन्, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, ओम बिरला (लोकसभा अध्यक्ष), पूर्व उप राष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू, राज्यसभा उप सभापति हरिवंश, राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, नितिन नवीन (राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष), रेखा गुप्ता (मुख्य मंत्री), अरुण सिंह महामंत्री, निर्मला सीतारमन्, प्रहलाद जोशी, अर्जुन मेघवाल, डॉ. जितेंद्र सिंह, हर्ष मल्होत्रा, बृजेंद्र गुप्ता, वीरेंद्र सचदेवा, प्रदेश अध्यक्ष सहित अनेक केंद्रीय मंत्रियों व दिल्ली सरकार के मंत्रियों की उपस्थित थे।

मुम्बई में भारत रत्न पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मशताब्दी के पावन अवसर पर पुष्पांजलि कार्यक्रम में श्रद्धांजलि देते उत्तर मुम्बई के सांसद केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी, विधायक प्रवीण दरेकर, विधायक अतुल भातखळकर, विधायक योगेश सागर, उत्तर मुम्बई के जिलाध्यक्ष दीपक बाला तावड़े और अन्य पदाधिकारी।

उद्योगपति विवेक देशपांडे कार्यगौरव पुरस्कार से सम्मानित

छत्रपति सम्भाजीनगर। उज्ज्वलाताई पवार एज्यूकेशन ग्रूप द्वारा उद्योगपति विवेक देशपांडे को कार्यगौरव पुरस्कार विगत दिवस प्रदान किया गया। उक्त पुरस्कार बायजाई शिक्षण संस्था के अध्यक्ष डॉ. आनंदा सुर्यवंशी, सुनील दंडे साहेब (विभागीय अधिकारी, अंबाजोगाई पिपल्स को. ऑप. बँक,) तथा संस्था के उपाध्यक्ष प्रा. भूषण सूर्यवंशी ने प्रदान किए।

गढ़चिरोली की प्रथम नागरिक, नवनिर्वाचित नगराध्यक्ष प्रणोती सागरराव निंभोरकर ने विगत दिवस हिंदी विवेक मासिक पत्रिका मुम्बई के प्रतिनिधि गजानन डोंगरे से उनके घर पर भेंट की। इस दौरान गजानन डोंगरे ने उन्हें हिंदी विवेक द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'मंदिरः राष्ट्र के ऊर्जा केंद्र' एवं 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः एक विशाल संघटन' पुस्तक उन्हें सप्रेम भेंट दी।

देवगिरी बैंक को मिला ग्रीन वर्ल्ड को प्राईड 2025 पुरस्कार

सहकार मंथन 2025 सहकारी सम्मेलन का आयोजन ग्रीन वर्ल्ड व कॉसमॉस बैंक द्वारा संयुक्त रूप से विश्व सहकारिता वर्ष के उपलक्ष्य में किया गया। इस सम्मेलन में सहकारी क्षेत्र में देवगिरी बैंक द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों को मान्यता देते हुए आदर्श कार्यपद्धति, सदस्य हितों को बढ़ावा देने और सुयोजित आर्थिक प्रबंधन के लिए देवगिरी नगरी सहकारी बैंक लिमिटेड और छत्रपति संभाजीनगर बैंक को ग्रीन वर्ल्ड को-प्राईड 2025 पुरस्कार की घोषणा की गई। पुरस्कार वितरण समारोह विगत दिवस पुणे में आयोजित किया गया। देवगिरी बैंक की ओर से बैंक के संचालक नागनाथ काजळे और मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रविण नांदेडकर ने उक्त पुरस्कार ग्रहण किया। समारोह में सहकारी क्षेत्र के कई गणमान्य व प्रतिनिधि उपस्थित थे। विदित हो कि देवगिरी बैंक ने पिछले कुछ वर्षों में निरंतर प्रगति की है और अपनी मजबूत वित्तीय स्थिति, पारदर्शी प्रशासन, ग्राहक-केंद्रित सेवाओं के कारण विशिष्ट पहचान बनाई है।

उक्त पुरस्कार पर प्रतिक्रिया देते हुए बैंक के अध्यक्ष किशोरदादा शितोळे ने कहा कि देवगिरी बैंक को प्राप्त ग्रीन वर्ल्ड को-प्राईड 2025 पुरस्कार हमें सहकारी मूल्यों का पालन करते हुए अधिक जिम्मेदारी से काम करने के लिए प्रेरित करता है। बैंक भविष्य में भी सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए काम करता रहेगा।

Emerald
CRESCENT
Live the precious
RERA NO.: P-IND-25-5789
Crafted FOR THOSE WHO APPRECIATE refined living.
PREMIUM RESIDENTIAL PLOTS
PLOT SIZES: 1500-2400 SQ FT
AMENITIES
ECO GYM
CRICKET PITCH
CLUB HOUSE ACCESS
WATER FOUNTAIN
GAZEBO
TENNIS COURT
OPEN SITTING AREA
SITE: MAYAKHEDI, AB BYPASS, INDORE, MP
CONTACT: +91-76106 76106
Emerald
CRESCENT